रिपोर्ट : हिन्दी दिवस, 2023

मनुष्य भाषा के बिना सपने भी नहीं देख सकता : प्रो. मंजू मुकुल

दिल्ली विश्वविद्यालय के श्याम लाल कॉलेज में **14 सितंबर 2023** को हिंदी दिवस के अवसर पर ग्लोबल भाषा के रूप में हिंदी की स्थिति विषय पर एक दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया। इस सेमिनार की मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की प्रोफेसर एवं भाषा की गंभीर अध्येता प्रोफेसर मंजू मुकुल थीं। वक्तव्य प्रारंभ करने से पूर्व उन्होंने कालेज तथा हिंदी विभाग के समस्त परिवार को हिंदी दिवस की बधाई दी और कहा कि इस तरह की आयोजन एक नई समझ का विस्तार करते हैं।

'ग्लोबल भाषा के रूप में हिंदी की स्थिति' पर चर्चा करते हुए उन्होंने वैश्विक स्तर पर इसके तीन आयाम बताए। (क) विश्व में हिंदी, (ख) हिंदी में विश्व तथा (ग)विश्व भाषा के रूप में हिंदी। भाषा को यादृच्छिक ध्वनि व्यवस्था से जोड़ते हुए उन्होंने यह भी कहा कि 'मनुष्य भाषा के बिना सपने भी नहीं देख सकता।' व्यक्ति के सोचने की प्रक्रिया भाषा के माध्यम से ही संभव होती है। हमारा चिंतन भाषा पर ही आधारित होता है, अर्थात हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भाषा की अहम भूमिका है।

दूसरे बिंदु के रूप में उन्होंने हिंदी की वैज्ञानिकता पर बल दिया और कहा कि हिंदी में वह क्षमता है कि वह प्रत्येक नागरिक को देश और दुनिया की समस्त जानकारी उपलब्ध करा रही है। हिंदी में वह सहजता तथा तालमेल का भाव है जो देश में एकत्व को स्थापित करता है। इसी बीच उन्होंने हिंदी के चर्चित कवि गिरिजा कुमार माथुर की कविता की ओर भी विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया जिसमें कवि हिंदी को जन की बोली मानते हुए कहता है

एक डोर में सबको जो है बांधती/ वह हिंदी है।'

तत्पश्चात भाषा नियोजन पर अपनी बात रखते हुए उनका कहना था कि हमें अपनी भारतीय भाषा नीति तथा शिक्षा नीति को भी देखना होगा। भारत ने भाषा नियोजन के माध्यम से ही बहुभाषिकता को अपनी ताकत बनाया है। अंत में उन्होंने बताया कि किस प्रकार विश्व भाषा के रूप में हिंदी का दखल दुनियाभर में बढ़ता जा रहा है। विश्व के बड़े-बड़े विश्वविद्यालय में हिंदी अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। इस दृष्टि से न सिर्फ हिंदी बोलने वालों की संख्या बढ़ी है, बल्कि हिंदी सीखने वालों की संख्या में भी भारी इजाफा हुआ है। अर्थात हिंदी बोलचाल की भाषा से कहीं आगे निकलकर जनसंपर्क की भाषा के रूप में नई क्रांति कर रही है। इसके अतिरिक्त उन्होंने हिंदी में फिल्मों के बढ़ते बाजार की ओर भी संकेत किया। दा स्मर्फ और ओपन हाइमर जैसी हॉलीवुड फिल्मों ने हिंदी में डब रूप में आकर न सिर्फ एक बड़ा बाजार निर्मित किया है अपितु रोजगार के भी अनेक दरवाजे खोल दिए हैं।

उनके इस व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को अधिक प्रगाढ़ता प्रदान करना था।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए हिंदी विभाग के प्रभारी डॉक्टर राजकुमार प्रसाद ने हिंदी को ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया से जोड़ा और कहा कि हिंदी दूसरी अन्य भाषाओं के मध्य सेतु का कार्य कर रही है हिंदी दिवस का यह संपूर्ण कार्यक्रम हिंदी साहित्य सभा एवं आईक्यूएसी के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ। कॉलेज तथा हिंदी विभाग के प्राध्यापकों के सदप्रयासों ने इस कार्यक्रम को अंतिम परिणति तक तक पहुंचाने में अपनी विशेष भूमिका निभाई। विद्यार्थियों में भी ग्लोबल भाषा के रूप में हिंदी को जानने समझने का एक अलग ही उत्साह दिखलाई दिया।

हिन्दी दिवस के अवसर पर कॉलेज के हिन्दी विभाग के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित पोस्टरों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसके द्वारा हिन्दी साहित्य के निर्माताओं के योगदान को रेखांकित किया गया।

इस कार्यक्रम में **80** से ज्यादा विद्याथियों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया.

हिन्दी साहित्य सभा, आईक्यूएसी एवं सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में
श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
का हिन्दी पखवाड़ा (1-15 सितंबर) के उपलक्ष्य में विशेष आयोजन
निबंध लेखन प्रतियोगिता
विषय : राष्ट्रभाषा हिन्दी की चुनौतियां
तिथि : 13 सितंबर, 2023
प्रथम पुरस्कार : 1500 रु.
द्वितीय पुरस्कार :1000 रु.
तृतीय पुरस्कार : 750 रु.
स्थान : बोर्ड रूम
समय : 10:00 बजे
विशेष संगोष्ठी
विषय : ग्लोबल भाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति
हिन्दी की विकास यात्रा पर विशेष प्रदर्शनी
भित्ति पत्रिका का लोकार्पण
14 सितंबर 11:00 बजे
वाद-विवाद प्रतियोगिता
विषय : 'क्या हिन्दी रोजगारोन्मुख भाषा है?'
तिथि : 13 सितंबर, 2023
प्रथम पुरस्कार : 1500 रु.
द्वितीय पुरस्कार :1000 रु.
तृतीय पुरस्कार : 750 रु.
स्थान : बोर्ड रूम
समय : 11:00 बजे
डॉ राजकुमार प्रसाद
प्रभारी, हिन्दी विभाग
प्रो. कुशा तिवारी
संयोजक, आईक्यूएसी

हिन्दी दिवस
प्रदर्शनी
हिन्दी दिवस : 2023
हिन्दी हैं हम
हिन्दी से हम